नवम्बर - २००५

दादावाणी

आत्मविज्ञानी 'ए. एम. पटेल' के भीतर प्रकट हुए
''दादा भगवान के असीम जय जयकार हो''

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: १, अंक : १
अखंड क्रमांक : १
नवम्बर २००५

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)२३९७४१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९
मुंबई :(०२२) २४१३७६१६
वडोदरा:(०२६५) २६४४४६५
सुरत : (०२६१) २५४४९६४
राजकोट: (०२८१) २४६८८३०
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 020-8204-0746
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org
www.ultimatespirituality.org

Publisher & Owner :
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)

१५ साल का

भारत :	८०० रूपिया
यु.एस.ए. :	१०० डॉलर
यु.के. :	७५ पाउन्ड

वार्षिक

भारत :	१०० रूपिया
यु.एस.ए. :	10 डॉलर
यु.के. :	7 पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से भेजे।

दादावाणी

ज्ञानी की शरण भव का भय मिटाये !

संपादकीय

निर्भीक पुरुष की शरण में जायें तो निरंतर निर्भयता में ही स्थिर करवाते हैं। परम पूज्य दादाश्री अक्रम विज्ञानी इस काल में हुए, उनके केवल दो घंटे के वैज्ञानिक ज्ञानप्रयोग द्वारा आत्मदृष्टि हो जाती हैं। तभी से निर्भयता की शुरूआत हो जाती है।

मिथ्या दृष्टि के संसर्ग से अनादि काल से विपरीत मान्यताएँ दृढ़ हो जाने की वजह से कभी-कभी व्यवहार में भय पैदा हो जाता है, वहाँ ज्ञानी पुरुष ज्ञान वाणी द्वारा मिथ्या समझ से मुक्त करवा कर शुद्ध स्वरूप समझाते हैं कि, 'आप शुद्धात्मा हुए, चंदूभाई (पाठक स्वयं ता नाम लें) अलग हैं', फिर आपको भय रहा ही कहाँ ? आत्मा के लिये कोई चीज़ भयकारी होती ही नहीं है और चंदूभाई की प्रकृति में जितने भय भरे पड़े हैं, उतने डिस्चार्ज हुए बगैर रहेंगे नहीं, जो इफेक्ट देकर चले जाते हैं। ये सब पिछले प्रतिघोष हैं, उसमें भयभीत होने जैसा रहा ही कहाँ ? ऐसे 'खुद' को हर तरह से निर्भीक अवस्था में स्थिर करवाते हैं।

प्रत्येक प्राकृतिक भय परिणाम में परम पूज्य दादाश्री जिन्हें ज्ञान साक्षात्कार हुआ है, उन्हें ठोक-ठोक कर, अलग-अलग तरीकों से, नई-नई समझ के द्वारा निर्भीक बनाते हैं कि आप शुद्धात्मा हैं, आप को ये पुद्गल के परिणाम छू तक नहीं सकते। यदि यह समझ, समझ में आ जाये तब फिर क्रोध, मान, माया, लोभ जो पुद्गल को होते हैं, उन्हें 'यह मुझे होता है' ऐसा अपने सिर लेने की भूल नहीं होगी। यह भूल तो, 'मेरा नहीं है'' कहने पर ही छूट जाती है।

संसार में जीवमात्र अशरण है, किसी का आश्रय है ही नहीं। फिर भी लालच के मारे या लाचारी से पुलिस वाले की, साहब की या आखिर में किसी व्यक्ति की शरण लेनी ही पड़ती है। वही शरण बाद में भय और फड़फड़ाहट का कारण बनती है। जब कि ज्ञानी पुरुष की शरण मिल गई कि हो गया निर्भीक! फिर लोगों की शरणागति लेने से मुक्ति मिल जाती है। फिर भी ज्ञानी पुरुष शरण दे कर लाचार, दीन नहीं बनाते। वे कहते हैं, कि 'आप के कर्मों का कर्ज़ चुकता हो जाये तो आप मेरे समान भगवान ही हैं, परमात्मा ही हैं। आपको भी हमारी शरण फिर छोड़ देनी है, आप सर्वांश हो जायेंगे।' यही विशेषता है, बलिहारी है, समर्थ ज्ञानी पुरुष की! जो मुमुक्षी जीवों के सिर पर सदा के लिये ऊपरी बन कर लाचार नहीं बनाते हैं, पर खुद के समकक्ष बना कर निर्भीक बना देते हैं।

किसी भी प्रकार की अज्ञानता है, वहाँ तक भय परिणाम है। एक-एक करके प्रत्येक अज्ञान मान्यता छूटती जाती है त्यों-त्यों पूर्ण रूप से निर्भीक होते जाते हैं। ज्ञानी की शरण में यहाँ सभी अज्ञान मान्यताएँ छूट जायें, उतना अक्रम विज्ञान आत्मसात् करना है। तभी एकावतारी होकर मोक्ष प्राप्ति हो सकेगी।

प्रस्तुत संकलन में ज्ञानी पुरुष की शरण से जन्मों जनम के सारे भय खत्म हो जाये ऐसी अद्‌भुत ज्ञान चाबियाँ संकलित हुई हैं, जो सभी मुमुक्षुओं को ज्ञान और ज्ञानी की पहचान करवाने में उपकारी सिद्ध होंगी।

दीपक देसाई ....

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रुपांतर है। कोष्ठक में दिये गये शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किये गये वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है।

'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पायें तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिये हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी की शरण भव का भय मिटाये !

मिथ्या दृष्टि के परिणाम रहे !

प्रश्नकर्ता : दैनिक जीवन में मिथ्या दृष्टि जाती नहीं और सम्यक दृष्टि चाहते हैं, तो इनका समन्वय कैसे करें ?

दादाश्री : यह 'ज्ञान' लेने के बाद आपकी सम्यक दृष्टि ही है। आपको जो मिथ्या दृष्टि दिखाई देती है, वह आपकी नहीं है। उस दृष्टि पर अब आपको प्रेम नहीं है। प्रेम है ? नहीं, आपको सम्यक् दृष्टि पर ही प्रेम है। जहाँ प्रेम है वह आपकी वस्तु। अब वह (भौतिक) है निपटाने की चीज़। भौतिक दृष्टि से मेरे हाथ मे रूपये रखें तो क्या थोड़ी देर के बाद मैं उसे फेंक दूँगा ? मिथ्या है इसलिये ? नहीं! नहीं फेंक सकता। संसारी लोग भी कहेंगे, 'पगले हैं, नहीं हो सकते ज्ञानी!' ज्ञानी आहिस्ता करके जेब में रख देते हैं, तो क्या मिथ्या दृष्टि हो गई ? यह तो व्यवहार है। दाढ़ी बनवायें, क्लीन शेव करवायें तो मिथ्यात्व हो गया ? तू इतनी बड़ी-बड़ी मूछें रखे तो सम्यक्त्व हो गया ? ऐसा कुछ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं है दादाजी, लाईन ऑफ डिमार्केशन (भेदरेखा) का महत्व है।

दादाश्री : उस दृष्टि से आपको सम्यक्त्व ही है। सम्यक्दर्शन है। इसलिये आपको मिथ्या दृष्टि का भय रहा करता है। पहले भय नहीं लगता था। आपको पहले भय लगता था कि यह मिथ्या दृष्टि हो जायेगी ? यह तो आपको शंका है कि यह मिथ्या दृष्टि होगी या क्या ? वह केवल शंका है, ऐसा वैसा है ही नहीं। क्योंकि अनादि काल से आराधना की है इसकी, इसलिये पहचान तो जाने वाली नहीं है न!

अर्थात ये पुरानी मान्यताएँ हैं एक तरह की। यदि ऐसी मान्यताएँ घर कर गई हों तो उन मान्यताओं को निकाल देना, झाड़ देना, ऐसा करके धूल उड़ा देना, ताकि कुछ न रहे। यह तो चरणविधि (आत्मज्ञानप्राप्ति के बाद पढ़ने की किताब) पढ़ने से सारी धूल उड़ जाती है। क्योंकि लम्बे अरसे से वही का वही देखा है न ?

प्रश्नकर्ता : अनंत जन्मों से।

दादाश्री : हाँ, और उसी का भय है बिना काम का तुझे! जो वस्तु आने वाली है उसका लगातार भय किस काम का ? यह तो जो वस्तु नहीं आने वाली हो, उसका भय है। वह मन में ऐसा होता है कि यह तो आने ही वाली है वह निश्चित हो गया है, फिर उसका भय रख कर क्या करना है ? कोई ऐसा भय क्यों रखे ? आत्मा के लिए भय नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। आपको जो शुद्धात्मा दिया है, उस पर कोई भय वाली चीज़ ही नहीं है। कैसी सेफसाईड और कितना आनंद है अंदर में! सुख के लिये उसे अन्य किसी की जरूरत ही नहीं है। खुद अपने स्वभाव से ही सुखमय है और निरालंब है। अवलंबन ही नहीं

जिसे, ऐसा आत्मा दिया है। दादा कैसे ७९ साल की उम्र में रहते हैं! नहीं है ऐसा ?

यह तो हमारा ज्ञान जो है न, उस ज्ञान के आधार से भय छूट जाते हैं। आपको ऐसी हिम्मत रहती है ?

लूटेंगे, लुटेगा पुद्गल का, आत्मा का नहीं !

यह मन, वाणी और देह, तीन करण (साधन) कहलाते हैं। इन तीन करणों का अमल है वही हमारे लिये बाधा रूप हैं। ये तीन के कारण तो यह संसारभाव उत्पन्न हुआ है। वर्ना स्वभावभाव जाता नहीं।

यह संसार एक बला है, यह समझ में आ गया तब से वह बला छूटती जायेगी। लोग ऐसा बोलते हैं, कि यह संसार एक बला है पर ऐसा समझते नहीं न!

गले पड़ी बला याद दिलाये। याद आये उस घड़ी 'दादा, दादा' करना पड़े। फिर से याद तो आयेगी ही, समय होने पर तुरंत।

प्रश्नकर्ता : मैं तो बहुत डरती थी, दादाजी।

दादाश्री : चाहे कितना भी क्यों न डरती हो, फिर भी बला लिपटी, यानि वह याद तो आये, उस घड़ी 'दादा, दादा' करना। यह बला लिपटी है, इसलिये तो खुद का कितना सारा आनंद, कितना सारा सुख सब आवृत रहा है। यह तो स्वरूप में आ गये हों तो भी इतनी अड़चनें अब भी करती है तो स्वरूप में नहीं आते तो कितने घूँसे मारती ? घूँसे मारने वाला दिखाई नहीं देता और घूँसे मारे कि 'ऐसे हो जायेगा तो ? ऐसा हो गया तो क्या होगा ?' 'ऐसे भी नहीं गिरने वाला और वैसे भी नहीं गिरने वाला। तू क्यों आया है सलाह देने को ?' ऐसा कहना। यह सूर्यनारायण कभी गिर जायेंगे क्या ? कुछ गिरता-करता नहीं। देखिएँ न, हम पर बैग आ गिरा था न ? मतलब गिरने वाली है तो गिर कर रहेगी। उसके लिये भय क्यों रखें ? गिरने वाला होगा तो हमारे नहीं कहने पर भी गिरे बगैर रहने वाला नहीं है। तब फिर वह गिरने वाला नहीं है ऐसा मानो न ? बिना वजह भय रख कर क्या करना है ? और यह हमें क्या लूट लेने वाला है ? पुद्गल को लुटेगा न! पुद्गल, पुद्गल को लूटेगा, कुछ आत्मा को थोड़े ही लूटेगा। हमारा क्या जाने वाला है ? हमें तो पहचानता ही नहीं। हमारा तो अव्याबाध स्वरूप है। कोई बाधा-पीड़ा पहुँचा ही नहीं सकता न!

ज्ञानी करें भय मुक्त !

ज्ञानी पुरुष से जो आ मिले और ज्ञानी पुरुष को ऐसा लगे कि इसे भय की ज़रूरत नहीं है, तो वे भय से मुक्त करा देते हैं और फिर पासिंग मार्क दे देते हैं। वर्ना ये तो इस समय 'फेल' हुए हैं। जिन्हें भय है, वे 'फेल' हुए हैं। भय जाये तो काम चले वर्ना चले ही नहीं न!

शंका जाये ज्ञान से !

अंधेरी रात में गाँव में दिये के प्रकाश में आपने कुटिया में साँप को घुसते देख लिया, फिर आप सो सकते हैं ? क्यों ? तब कहे, भय लगता है।

तब आप कहेंगे, 'मैं ने साँप को घुसते देखा है, निकलता देखूँ तो सो जाऊँ।' मतलब घुसने का ज्ञान हुआ है। निकलने का ज्ञान होने पर छूट सके। जहाँ तक मन में शंका रहे, वहाँ तक नहीं छूट पायें।

प्रश्नकर्ता : निकलते नहीं देखा वहाँ तक शंका कैसे जाये ?

दादाश्री : 'ज्ञानी' के ज्ञान से शंका जाये। कोई, किसी से, साँप से भी छूआ नहीं जाये ऐसा यह जगत है।

प्रश्नकर्ता : यानी भय नहीं रखना ? साँप को भले ही देख लिया पर उसका भय नहीं रखना।

दादाश्री : भय नहीं रखना ऐसा रखने से नहीं रखा जाता, वह तो घुस ही जाता है। अंदर शंका करता ही रहै। किसी से कुछ होने वाला नहीं है। ज्ञान में रहने पर शंका जाती है।

भय जायें, वह विज्ञान !

भय जाये तो वीतरागता उत्पन्न होगी। भय जायें उसी का नाम विज्ञान। जिससे भय जायें और वीतरागता उत्पन्न हो, वह विज्ञान कहलाता है। अन्य सभी विज्ञान झूठे। बड़े-बड़े संतों ने कहा है कि 'भय पहले भगाइये और बाद में वीतरागता उत्पन्न होगी।' ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। आत्मज्ञान हुए बगैर भय जाता नहीं।

प्रश्नकर्ता : आत्मज्ञान प्राप्त हो, तभी निर्भयता आती है ?

दादाश्री : अन्यथा निर्भयता उत्पन्न ही नहीं होती न ? क्योंकि जब तक 'मैं चंदूभाई हूँ' तब तक भय ही है। 'मैं आत्मा हूँ' हुआ कि भय गया।

प्रश्नकर्ता : ऐसा है कि शरीर है तब तक डर है ?

दादाश्री : नहीं, शरीर तो रहेगा ही, शरीर तो भगवान महावीर का भी था।

प्रश्नकर्ता : हाँ। मगर आत्मज्ञान हो तभी निर्भय...

दादाश्री : आत्मज्ञान होने पर शरीर तो उपकारी हुआ। देह मित्र समान हो जाता है। कर्मों का निबटारा जो करना है, वह अपने आप हो सकेगा न!

दुनिया की शांति हेतु यह अवतार !

प्रश्नकर्ता : यहाँ (आत्मज्ञान पाये हुए) महात्माओं को देखते हैं न, तो शांति लगती है।

दादाश्री : हाँ, सारा भय निकल जाता है। उसका, खुद का ही भय निकल गया है न ? वह लड़का जो है, उसका भी भय निकल गया है।

प्रश्नकर्ता : मेरा भय तो नहीं गया ?

दादाश्री : आपका भय कैसे जाये ? यह तो कोई निकाल देगा तब जायेगा वर्ना नहीं जाने वाला। किसी का भी नहीं जाता। ज्ञानी पुरुष यानि उनके भीतर जो आत्मा प्रकट हुआ है, परमात्मा स्वरूप है, उनकी कृपा से क्या नहीं होता ? यदि परमात्मा की सीधी, डिरेक्ट कृपा उतरी, वहाँ क्या नहीं होता ? जो परमात्मा अंदर विराजमान है, वह चौदह लोक का नाथ है। सारे वर्ल्ड की शांति हेतु आज यह जन्म है। आज सारा वर्ल्ड जल रहा है, ठंडी आग में जल रहा है।

शुद्धात्मा, वहाँ भय नहीं !

आत्मा के कल्याण हेतु ही यह जन्म है। यदि आत्मा का कल्याण नहीं हुआ तो जंगल में जा कर मातम मना। अब कोई भय-वय डराता नहीं है न ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : शुद्धात्मा है वहाँ भय नहीं और भय है वहाँ शुद्धात्मा नहीं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यह सायकोलोजिकल इफेक्ट नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मैं जब 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा बोलता हूँ तब...

दादाश्री : बोलने की ज़रूरत नहीं। अंदर से अपने आप ही आता है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जब मैं बहुत भयभीत होता हूँ तभी ऑटॉमेटिकली आता है, अन्यथा नहीं आता है।

दादाश्री : तो वही सच्चा, भय लगता है तब भीतर से आता है। उस घड़ी I-My का सेपरेशन भीतर हो ही गया होता है। इसलिये जागृति आती है।

अक्रम, अलौकिक मार्ग !

प्रश्नकर्ता : हमारा जो मार्ग है, वह बहुत अलौकिक है।

दादाश्री : अलौकिक, बहुत अलौकिक। इसलिये हम कहते हैं न, दस लाख वर्षों में एक बार प्रकट होता है यह मार्ग। पर लोगों की समझ में ठीक से आना चाहिए। जैसे-जैसे वक्त गुज़रेगा, वैसे-वैसे आगे की बात समझ में आती जायेगी। अलग तरह का और बिना मेहनत का, कष्ट नहीं, कुछ भी नहीं। बस, ज्ञानी के पास बैठने से ही ज्ञानी स्वरूप हो जायें, ऐसा मार्ग। और वो भी बिना चिंता बैठे रहना है। चिंता नहीं, उपाधि नहीं, भय नहीं। इस लोक का भय नहीं, परलोक का भय नहीं। अब अगले जन्म में क्या होगा ? ऐसा-वैसा कोई डर नहीं। यानि बहुत ही अलौकिक वस्तु है यह तो, मगर लोगों के ऐसे पुण्य जागे नहीं है। ऐसे पुण्य जागना बहुत मुश्किल बात है, क्योंकि ऐसा आसान, सरल मोक्ष मार्ग किसी को मिलता नहीं। इन साधुओं ने स्त्रियों का त्याग किया फिर भी मोक्षमार्ग मिलता नहीं न ?

'मोक्ष नहीं है' मान्यता से भड़क !

'मोक्ष नहीं है' ऐसा कहा, इसलिये किस प्रकार छूटें ? अरे, मोक्ष नहीं है, मगर मोक्ष के दरवाज़े को हाथ लगा सकते हैं और अंदर के सारे महल दिखाई देते हैं। दरवाजे ट्रान्सपेरेन्ट (पारदर्शक) हैं, इसलिये अंदर का सब दिखाई दे ऐसा है। पर यह तो शोर मचा दिया कि 'मोक्ष नहीं है, मोक्ष नहीं है।' मगर यह तुझे बताया किसने ? तब कहे कि, 'यह हमारे गुरु के गुरु ने बताया।' पर गुरु के गुरु को देखने जायें तो कोई होता ही नहीं! यह तो सब बिना पंख उड़ान भरने जैसी बात है। कहीं कुछ आवाज़ हुई और कुत्ता भौंका, कोई बाहर निकला होगा और शोर मचा दिया कि 'क्या है ? क्या है ?' इस पर दूसरे ने कहा, 'चोर देखा' और हो गया हंगामा, ऐसा है। है कुछ भी नहीं और बिना वजह का डर और भड़क!! मगर क्या हो ? इन लोगों को भस्मक ग्रह का भोगना बाकी होगा, इसलिये ऐसा हुआ होगा न ? मगर अब तो वह सब पूरा होने वाला है, यह निश्चित ही है।

क्रमिक मार्ग का आधार टूटा !

आपका आत्मा स्वीकार करे, तभी ये सब बातें स्वीकारना वर्ना मेरे डर के मारे मत स्वीकार करना। यह तो वीतरागों का ज्ञान है। वही का वही, इस समय 'अक्रम' हो कर खड़ा हुआ है। क्योंकि क्रमिक मार्ग का बेज़मेन्ट (आधार) है, वह सड़ गया है। क्रमिक मार्ग का बेज़मेन्ट किसे कहते हैं ? तब कहे, मन-वचन-काया की एकात्मवृत्ति टूट गई, इसलिये क्रमिक मार्ग का बेज़मेन्ट टूट गया। जब तक मन-वचन-काया एकाकार होते हैं, तब तक क्रमिक मार्ग बहुत ही अच्छी तरह चलता रहता है। भगवान महावीर के जाने के बाद क्रमिक मार्ग का सारा बेज़मेन्ट ही टूट गया है। परिणाम स्वरूप सभी संप्रदायों में ये सब मिथ्यात्व से आगे नहीं बढ़े हैं। मिथ्यात्व प्रगाढ़ किया। इसलिये परम विनय के नाम पर कुछ नहीं रहा। वर्ना ज्ञानी पुरुष के पास सामने चल कर जाना चाहिए। वे वर्ल्ड के अजायब पुरुष कहलाते हैं! मुझे खुद बोलना पड़ता है। हीरे को खुद बोलना पड़ रहा है तो हमे नहीं समझना चाहिए कि जौहरी अब नहीं रहे हैं।

गुरु-शिष्य के बीच अकुलाहट !

क्रमिक मार्ग में गुरु उनके शिष्य पर क्रोध करते हैं, वहाँ भगवान ने कहा है कि शिष्य के हित के लिये करते हैं। क्योंकि क्रोध स्वयं के हित के लिये है या दूसरों के हित के लिये है ? परमार्थ हेतु क्रोध का प्रयोग करने का फल पुण्य मिलता है। पर इन ज्ञानियों को तो (कर्ताभाव नहीं होने से) पुण्य भी नहीं मिलता। उनके तो वहीं का वहीं एडजस्ट ही हो जाता है, खत्म हो जाता है। क्रमिक में तो अंत तक, बड़े सवेरे बेचैन के बेचैन ही बैठे होते है। गुरु

जी अभी कुछ कहेंगे, अभी कुछ सुनायेंगे, उन्हें भी भड़क ऐसी ही है अंत तक, दसवें गुणस्थान तक यही वेष। आँख लाल हो जाती है। हमें भी भीतर जलन होती है। कितनी वेदनायें सहन करनी पड़ती हैं, तब मोक्ष मिलता है। यह क्या लड्डू खाने जैसा (आसान) है ? यह तो कभी ही 'अक्रम विज्ञान' नसीब होता है!

संसार में मोक्ष, अक्रम लिफ्ट से !

'क्रमिक मार्ग' में क्रमशः त्याग करते करते जाना पड़ता है। एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ना पड़ता है। 'दूसरा अक्रम मार्ग', जो वर्ल्ड का आश्चर्य है! लिफ्ट में बैठ कर मोक्ष में जा सकते हैं। उसमें ग्रहण या त्याग कुछ भी नहीं होता। यह बिना मेहनत का मार्ग है। लिफ्ट मार्ग है। महा पुण्यवान हैं, उसके लिये 'यह' मार्ग है। यहाँ ज्ञानी मुहर लगा देते हैं और मोक्ष हो जाता है। उधार कुछ रखते नहीं, नकद चाहिए। इसलिये 'यह' नकद मार्ग निकला है। दिस इस द ओन्ली केश बैन्क इन द वर्ल्ड।

'क्रमिक मार्ग' में सत्संग मिला हो तो पाँच सौ सीढ़ियाँ चढ़ जाते हैं और एकाध कुसंग से हज़ार सीढ़ियाँ उतर भी पड़ता है। कोई ठिकाना नहीं, अत्याधिक कष्ट सहने पड़ते हैं और यह 'अक्रम मार्ग' तो सेफसाइड वाला मार्ग। लिफ्ट में से गिरने का डर ही नहीं और संसार में रहते हुए मोक्ष पा सकते हैं। चक्रवर्ती भरत राजा ने पाया था उस तरह, लड़ाइयाँ लड़ते, राज्य भोगते हुए मोक्ष!

ज्ञानी की शरण, संसार में तरण !

जिस ने ज्ञानी की शरण स्वीकारी, इतनी ही शरण, कहाँ तक कि अपना (कर्ज) चुकता नहीं होता तब तक। फिर शरण की जरूरत होती ही नहीं न ?

प्रश्नकर्ता : फिर दादा, मचानें (सेन्ट्रिंग) उतार डालनी हैं ?

दादाश्री : मतलब एक ही शरण ली तो सारी दुनिया की सब मार नहीं पड़ेगी हम पर। अन्यथा सारी दुनिया की शरण लेनी पड़े। पुलिस वाले-बुलिस वाले की सभी की शरण लेनी पड़े। ज्ञान नहीं हो और पुलिस वाला यहाँ आ कर कहे, 'चंदूभाई है क्या ?' तब फड़फड़ाहट, फड़फड़ाहट, फड़फड़ाहट कि 'चंदूभाई का तुम्हें क्या काम है ?' अब तो हमें कहे तो हम कहें, कि 'हाँ, भैया। यह रहे चंदूभाई, आपको कोई काम है ?' तब कहे, 'साहब बुलाते हैं। उसके नाम का वारन्ट है।' तब हम कहें, 'चलिये।' तो और हमें क्या करना है ? घर पर दरवाजा हमें बंद करना पड़ता था। यहाँ तो पुलिस वाले बंद कर देते हैं। चिंता ही नहीं।

और खाने-पीने का जो हिसाब है न 'व्यवस्थित' (सायन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स), वह हिसाब के अनुसार आ मिलेगा। मतलब यह सब हमें देखने की जरूरत नहीं है। हमें दरवाजा बंद करना नहीं पड़ेगा, पुलिस वाले बंद कर देंगे। यद्यपि ऐसी अवस्था नहीं आयेगी, ऐसा नहीं होगा। पर आये तो भी भड़कने जैसी बात नहीं है।

घर में किसी का स्वभाव सुधरा कि नहीं सुधरा ?

लोग मुझसे पूछते हैं कि आप को सीधा किसने किया ? मुझे लोगों ने ही सीधा किया है। सीधा करते-करते सरल ही बना दिया है। इसलिये मेरी बातों से सीधे हो जाओ वर्ना लोग ठोक-पीट कर सीधा करेंगे। लोग ठोक-पीट कर सीधा किये बगैर रहेंगे क्या ? घर के लोग तो रात-दिन क्या करते हैं ? सीधा ही करते हैं। तब कहते हैं, सब मेरे विरुद्ध हैं। आपके विरुद्ध कोई नहीं है। यह तो सब आपको सीधा ही करते हैं।

प्रश्नकर्ता : घर में टकराव है वही तो हमें सीधा करता है, ऐसा सुनने को कहाँ मिलेगा, दादाजी!

और यहाँ तो हर एक को ऐसा लगता है कि मानो दादाजी, मेरी ही बात, हमारी ही बात करते हैं।

दादाश्री : इसीलिये हम कहते हैं न कि भैया, काम निकाल लो। बचपन से, मेरा भाव रह गया है। यह एक डिस्चार्ज कर्म मेरा अब शेष रह गया है कि मुझे जो मिले, उसे सुख होना ही चाहिए।

उसमें टेस्टेड होना चाहिए !

प्रश्नकर्ता : भय और ज्ञान का एक-दूसरे से कोई लेना-देना है, क्या ?

दादाश्री : भय और ज्ञान का कोई लेना-देना नहीं है। पर भीतर में भय पैदा हुआ ऐसा हमें पता चलता है। भय पैदा होता है। मेरा क्या कहना है ? ज्ञान उसका नाम कहलाये कि भय खड़ा ही नहीं होना चाहिए। उतनी कमी शेष है। हमारा अपना सब टेस्टेड होना चाहिए। बिना टेस्ट का किसी काम का नहीं है।

आपको कल कोई विरोधी आ मिला और वह उल्टा सीधा बोलने लगा, आपका अपमान करने लगा तो वह आपका विरोधी है या आपका थर्मामीटर है ?

प्रश्नकर्ता : थर्मामीटर कहलाये न ?

दादाश्री : हाँ, अब वह हमारा थर्मामीटर कहलाता है कि हमें दादा का ज्ञान हाजिर रहता है या नहीं ? वह आदमी किसे कहता है ?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई को।

दादाश्री : वह चंदूभाई को कहता है। आपको तो कहेगा ही नहीं न ? आपको तो पहचानता ही नहीं न ? कैसे पहचाने ? चंदूभाई से कहता है, तब हम चंदूभाई से कहें कि आपका कोई दोष हो तभी कहता है न, वर्ना कौन फालतू है ?

एक परमाणु जितना भी हिले तो कहाँ पर हिलता है, इसका पता करना। एक परमाणु जितना भी भय पैदा होता है ? ऐसा विकल्प भी खड़ा होता है ? हम तो विकल्प खड़ा हो तो उसके सामने हमारा वह ज्ञान हाजिर हो जाता है, पर विकल्प जो खड़ा हुआ वह भय है। वह नहीं होना चाहिए। यदि हम शुद्धात्मा हैं, तो दूसरा कुछ नहीं है। मगर दूसरा कुछ है विकल्प कुछ असर है भय का अभी।

ज्ञान प्राप्ति के बाद कैसा होना चाहिए ?

प्रश्नकर्ता : हमारा ज्ञान टोपमोस्ट रूप से प्रकाशमान हो, उसके लिये क्या करना चाहिए ?

दादाश्री : किसी को हमारा भय नहीं लगना चाहिए। किसी को हम से दु:ख नहीं होना चाहिए। ऐसा कुछ मोरल (नीति) तो होना चाहिए न ?

प्रश्नकर्ता : किसी ने ज्ञान लिया फिर भी मोह, भय गये नहीं, वह निर्लेप नहीं हो पाया, ऐसे में क्या करना ?

दादाश्री : उसे ज्ञान में फिर से बैठना चाहिये क्योंकि यह विज्ञान क्या है कि जितने हमने शब्द कहे वे शब्दश: बरतने चाहिये, क्योकिं घंटे भर में सारा हल निकालना है। अनंत जन्मों की कमी एक घंटे में पूरी करनी है। इसलिये शब्दश:, पोइन्ट टू पोइन्ट रहना ज़रूरी है। हमारे यहाँ पोइन्ट की खबर न हो तो ठंड के दिनो में पंखा घूम जाये ऐसी भूल इसमें भी होती है। इसलिए हम उसे फिर से ज्ञान में बिठाते हैं। कईयों को पाँच-पाँच बार बिठाना पड़ता है। मगर उनका हल निकल आता है। फिर भय लगता ही नहीं। इस ज्ञान प्राप्ति के बाद वास्तव में भय नहीं लगना चाहिए। निर्भय ही रहना चाहिए। यह वीतरागी विज्ञान है। उसे भय लगता ही नहीं, क्योंकि खुद शुद्धात्मा है, तो भय किसे लगने वाला है ?

रहना आत्मा रूप हो कर !

जैसे क्रोध-मान-माया-लोभ पुद्गल में होते हैं और खुद अपने सिर ले कर कहता है कि मुझे होते हैं ये सभी। उसी तरह सब 'मुझे होता है' ऐसा हो जाता है।

दादावाणी

पुद्गल में एकाकार नहीं हुआ तो भगवान ही हो गया। 'मुझे होता है' ऐसा नहीं होता। कुछ भी समझ में न आये तो 'मेरा नहीं है' कहना। 'यह मेरा है ही नहीं। मेरा स्वरूप नहीं है।' ऐसा कहे तो भी अलग हो जाता है। पहले जैसे भय रहते नहीं न ? पहले तो तड़फड़ाहट भी होती थी, नहीं ? तुझे यह भय पसंद था ?

प्रश्नकर्ता : पसंद नहीं था।

दादाश्री : क्या करता था तू ?

प्रश्नकर्ता : उसका उपाय नहीं मिलता था, तब फिर सो जाता था।

दादाश्री : तुम्हारे पिताजी को पूछना था न कि मुझे इतना भय क्यों लगता है ?

प्रश्नकर्ता : वे खुद भय में रहते हैं न! सारा संसार भय में घूमता है, दादाजी।

दादाश्री : तो किसे कहें ? पिताजी क्या कहेंगे ? सो जा चुपचाप, आया बड़ा भय वाला।

प्रश्नकर्ता : आप निर्भय हैं और हमें निर्भय बनाया है।

दादाश्री : आप निर्भय होंगे या नहीं ?

प्रश्नकर्ता : अब तो भय वाली जगह पर भी निर्भय हो कर रहते हैं। मानसिक भय नहीं होता। इस समय मानो कर्फ्यु लग गया और हमें ऑफिस से घर जाना हो तो भय नहीं लगेगा। हमने किसी का बिगाड़ा नहीं, तो हमें कुछ होने वाला नहीं है।

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो कुछ बिगड़ेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : मतलब, भूतकाल में मैंने किसी पुलिस को पत्थर मारा हो तो मुझे डर रहेगा, ऐसा भाव, तिरस्कार भाव रहेगा ?

दादाश्री : वह सब ठीक है, पर फिर भी मनुष्य को भय तो रहता ही है।

प्रश्नकर्ता : दादा, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तभी भय नहीं रहता। शुद्धात्मा ही मेरा स्वरूप है।

दादाश्री : शुद्धात्मा रहा तो भय नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : जब भय का वातावरण आए तब शुद्धात्मा में आया जाता है। ऐसा जब अचानक आये...

दादाश्री : तब होम डिपार्टमेन्ट में (आत्मा स्वरूप में) चले जाना।

प्रश्नकर्ता : तब खुद बिना कहे शुद्धात्मा में आ जाता है। उसे कहना नहीं पड़ता कि, 'भैया, अब आ जा।'

दादाश्री : तब वह घुस ही जायेगा। दरवाजे खोल कर घुस जायेगा।

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण निर्भय कब हो सकते हैं ?

दादाश्री : वह तो निर्भय समूह में बैठे रहें तब। भय वालों में जायें तो भय दिखायेंगे। भय वालों का समूह दौड़े तब वह भी दौड़ता है। यह समूह नहीं दौड़ता तो वह भी नहीं दौड़ता।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप ने अभी बताया कि भय नहीं हो वहाँ से भी खोज निकाले। ऐसा करेंगे तो, वैसा करेंगे तो ?

दादाश्री : हाँ, लोग तो खोज निकालते हैं।

प्रश्नकर्ता : कल इसी रोड पर ही लूटा था, आज भी लूट लिया तो ?

दादाश्री : हाँ, लूट लेंगे, ऐसा भय लगता है। इस रास्ते पर भय नहीं है, कैसे लूट लेंगे ? दो-चार साधु जा रहे हों तो वे कहेंगे कि हम से क्या ले जाने वाला है ? बहुत हुआ तो लोटा ले जायेगा। फिर दूसरा विचार आता है कि हाथ-पैर तोड़ दिये तो मेरा क्या

होगा ? 'मेरा क्या होगा' ऐसा कहा वह अर्थहीन है। तू मालिक और तुझे 'क्या होगा' ऐसा होता होगा ? यह तो देह का स्वामीपन किया है, वह स्वामीपन छोड़ दे ताकि तुझे किसी प्रकार का भय ही नहीं रहे और न रहे भड़क।

प्रश्नकर्ता : आत्मा हो जाना। आत्मा में रहना।

दादाश्री : आत्मा हो गये हो तो अब रहो आज्ञा पूर्वक। लेकिन पहले की आदत हो गई है इसलिये वहाँ जाता है। चंदूभाई की तो आदत है न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है न। आप कहते हैं न कि ठीक हो गया है तो अंदर कैसा होना चाहिए ?

दादाश्री : बाहर के सारे झूठे भय, वो सब नहीं लगते तब ठीक हो गया कहलाता है। ठीक नहीं हुआ हो तो भय लगता रहता है। बाहर उपाधि छूती नहीं। जितनी छूएगी, उतनी हिम्मत पस्त हो जायेगी।

कमियाँ दूर करनी, ज्ञानी की शरण में !

प्रश्नकर्ता : बहुत परेशानियाँ खड़ी हों तो डाँवाडोल हो जाते हैं ज़रा ?

दादाश्री : हमारे इस ज्ञान और पाँच आज्ञा में रहे तो कुछ भी नहीं होने वाला। और नहीं तो डाँवाडोल होकर भी यह जगत कभी गिर नहीं पड़ा है, न ही औंधा हो गया है। यह जगत गिर जाने वाला भी नहीं है। सूर्यनारायण भी गिरने वाले नहीं है और चाँद भी गिरने वाला नहीं है, कुछ भी गिरने वाला नहीं है, न ही यह जगत औंधा होने वाला है! निर्भय जगत है! भय जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। केवल भड़क है, और कुछ नहीं है।

कोई संघ जंगल से गुजर रहा हो, वहाँ लोगों ने कहा कि 'इस जंगल में तो बड़े-बड़े बाघ, भेड़िये और शेर रहते हैं।' तो मन में सभी को डर लगता है। तब गाँव वाले कहेंगे कि, 'इस गाँव में एक बाघमार खाँ रहता है, आप उसे साथ ले जायें, फिर आप को कोई दिक्कत नहीं आयेगी।' इसलिये फिर सारा संघ उस बाघमार खाँ को ढूँढ निकालता है। बाघमार खाँ कहेगा कि, 'भैये रोजाना दस रूपये लूँगा, तीन दिन जाने में होंगे और तीन दिन आने में होंगे। छह दिनों के साठ रूपये लूँगा।' जो सब कबूल कर लेते हैं। साथ में बाघमार खाँ आया तो सारा संघ आराम से आगे बढ़ता है। अब बाघ दहाड़े बिना थोड़ा रहने वाला है ? जंगल में दहाड़ तो सुनाई देगी न ? तो दहाड़ सुनते ही सब बाघमार खाँ का मुँह ताकने लगते है। तब बाघमार खाँ कहेगा, 'साहब, वे तो सब पिंजरे में बंद हैं, पिंजरे में से बोल रहे हैं' तो फिर सब शांत हो जाते हैं। हमारे साथ बाघमार खाँ है न, बस इतना ही चाहिए सबको!

कोई भी खा जाने वाला नहीं है। किसी की ताकत नहीं है। आपको भगवान भी कुछ कर सके ऐसा नहीं है, ऐसा यह संसार है। भगवान क्यों कुछ करने लगे ? भगवान यदि आप को कुछ करें तो वे फँस जायेंगे।

जंगल में बाघमार खाँ साथ में है, इसलिये सब बैठे रहते हैं न ? वर्ना नहीं बैठे रहते न ? खाना हो तो भी छोड़ दे। तो भी चला जाये। तू भी ऐसा ही करता था ? इतने बड़े जंगल में कहाँ तक बैठा रहता ? यहाँ वह बाघमार खाँ साथ आया होता है न, रास्ते में रक्षा करने वाला साथ आया हो तब तक डर नहीं लगता। अगर वह चला जाये तो फिर डर लगता है। अब बाघमार खाँ कुछ बाघ को मार डालेगा ऐसा नहीं है। यह तो हमें हिम्मत रहती है कि बाघमार खाँ हमारे साथ है न, एक हिम्मत ही। अब एक आदमी उसका नाम बाघमार खाँ है पर हम मान लेते हैं कि वह बाघमार खाँ ही है। मतलब सब अंदाजन् अंदाजन् चलता है यह तो। यह तो व्यवस्थित शक्ति चलाती है। बाकी, ये लोग तो अंदाजन् पर ही रहते है। अब हमें ऐसे बाहरी अवलंबन की ज़रूरत नहीं रही।

'दादा लिमिटेड' को समर्पित !

यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद संसार की उपाधि छूती तक नहीं। टच ही नहीं होती। यह ज्ञान ही स्वतंत्र बनाने वाला है। भगवान भी ऊपरी नहीं होना चाहिए। भगवान किस लिये चाहिए ऊपरी ? भगवान तो आप का स्वरूप है। ऊपरी किस लिये चाहिए ? ऊपरी कैसे रास आये ? एक दिन भी कोई ऊपरी हो तो वह कैसे रास आयेगा ? मुझे ऊपरी कोई रास नहीं आता था। मेरी उसके साथ बनती नहीं। मेरा बाग़ी दिमाग!

बिना वजह भड़क किस लिये है ? ना कोई लेना-देना ? ये सारे कागज़ी बाघ है! बाघ की दहाड़ सुन कर एक आदमी घबरा गया। मैं ने कहा, 'पिंजरे में बंद है। बिना वजह क्यों भड़कते हो ?' और मैं जिम्मेवारी लेता हूँ, फिर तुझे क्या तकलीफ है ? हम जिम्मेवारी नहीं लेते ? तेरी जिम्मेवारी मैं ने नहीं ली ?

प्रश्नकर्ता : ली है, ली है।

दादाश्री : हाँ, सारी जिम्मेवारी ली है फिर तुझे भड़कने का क्या काम ? तू भड़कना मत। मैं ने उसे कहा है कि जब कभी दु:ख आये, तो दादा के पास भेज देना। दु:ख से कहो, 'जा दादा के पास! यह सारी कंपनी उनके नाम से चलती है। वहाँ जाओ न, यहाँ क्या है ? 'दादा लिमिटेड' है वहाँ जाओ, ऐसा कहना।

थरथराना कष्टों को !

अब सिंह की संतान को सियार क्या करने वाला है ? ये सारे सियार क्या कर लेंगे ? और यदि कुछ करें भी, तो वह तो जिसे जानता है उसे करेगा न ? चंदूभाई को पहचानते है न ? तुझे कहाँ पहचानता है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : इसलिये, कायर बनो न कभी भी, कष्टों को सदा कंपाना। कष्ट हमारे यहाँ आयें तो उसे मन में ऐसा हो कि यहाँ कहाँ आया ? ये तो डरते भी नहीं। निडर देखें तो वही फिर डरते हैं। इन कष्टों का स्वभाव कैसा होता है कि उन्हें देखते ही लोग डरते है। फिर वो रौब जमाते हैं! पर यदि सामने वाला डरता नहीं तो यह कष्ट डर जाता है बेचारा। मतलब कष्ट कांपते हैं ऐसे कि, 'इस घर कहाँ से आया ?'

ज्ञान हाज़िर, भय गैरहाजिर !

ये बाह्य प्रयोग सारे चले जाने वाली की चीज़ें हैं। बाह्य प्रयोग (क्रियाएं) और आंतरिक प्रयोग (जागृति)। आंतरिक प्रयोग यानि देखना, जानना, सत्संग करना, आज्ञा में रहना। और यह बाह्य प्रयोग एक को बंद करें तो दूसरा सब कच्चा पड़ जाता है। इसे (आंतरिक प्रयोग) बंद करें तो दूसरा कच्चा पड़ जाता है। बाहर वाला बाधा रूप नहीं है। यह तो विकल्प है। एक प्रकार का भय है कि मुझे ऐसे काट खायेगा कि वैसे काट खायेगा। वास्तव में बाधा रूप नहीं है। ज्ञान हाज़िर तो दुनिया गैरहाज़िर, ज्ञान गैरहाज़िर तो दुनिया हाजिर।

निरंतर रहना अपने होम में !

वर्ना इस उम्र में वहाँ एरोड्रम पर ऐसे तालियाँ बजा कर गाते हैं, क्या ? यह काटे, वह काटे, वह काटे मगर सारे दर्द चले गये हैं। सब भूल जाते हैं। बस, वही हो गया है! हम उतना ही देखते हैं। हमें यह कुछ याद नहीं रहता। कोई पूछे, 'कहाँ से आये ?' तो हमें इसका खयाल-वयाल नहीं होता। किस लिये सब याद रखना ? आगे-आगे सारी तैयारियाँ होती हैं। व्यवस्थित का ऐसा नियम है कि जो नहीं सोचता, उसका व्यवस्थित एक्जेक्ट होता है और विचार करें तो ज़रा इधर-उधर होता है। बस इतना ही अंतर। भीतर शुद्धात्मा भगवान बैठे हैं न ? वो

क्या ऐसा लेकर आये हैं। पगले का भी चलता है न ? अंदर एरोप्लेन में सो भी रहे थे। अरे, गिर पड़ा तो क्या होगा ? गिरने वाला नहीं है ? गिर पड़ते हैं न ? उसे विचार ही नहीं आता न ? तब भी भड़कता है कोई ? और हमें तो क्या करना पड़ता है ? होम डिपार्टमेन्ट में ही रहना पड़ता है। क्योंकि अचानक ही गिरता है। उसके बजाय हम होम डिपार्टमेन्ट में रहते हों तो फोरेन का जोखिम उड़ गया। यह तो गिरने का स्थान न ? यह स्थान थोड़े ही स्थिर रहने वाला है ?

मोटर हो तो टायर बर्स्ट होता या ऐसा कुछ होता है पर वहीं की वहीं पड़ी रहती है न ? इसमें तो कुछ हुआ तो ? इसके बजाय हम सोच कर ही बैठे कि जब गिरना हो गिरे, पर हम अपने होम (निज स्वरूप) में।

संगी चेतना, भय डिस्चार्ज रूप में...

वास्तव में भय होता नहीं है, खाली भड़क ही है। पर भय बना रहता है कि, ऐसा हो जायेगा, वैसा हो जायेगा। ये सारे भय ज्ञान प्राप्त होते ही नष्ट हो जाते हैं। भीतर पाप धुल गये न, इससे भय नष्ट हो गये। सब हल्का हो जाता है, नहीं तो रात-दिन भड़क भड़क ही रहती है मनुष्यों को, तो करें क्या फिर **?**

प्रश्नकर्ता : दादाजी, साधारण रूप से थोड़ा-बहुत भय कभी उत्पन्न हो तो उसके लिये अधिक निदिध्यासन कैसे करना ?

दादाश्री : नहीं, इसमें निदिध्यासन करने की जरूरत नहीं। वह डर जो रहता है न, वह तो भरा हुआ डर है। मतलब मैं यहाँ विधि करवाऊँ उस समय नई तरह की आवाज़ हो तो उसका शरीर चौंक उठता है, पर खुद अंदर नहीं चौंकता। शरीर हिला, आपको पता चल जाता है न ? हमें कभी-कभी ऐसा होता है कि हमने पहले कभी सुनी नहीं हो ऐसी आवाज़ सुनाई पड़े तो हमारा शरीर भी चौंक जाता है। आपको पता भी चलता है कि दादाजी चौंके। हमें भी पता चलता है कि यह शरीर चौंका! मतलब देह संगी चेतना का फल है। वह आत्मा का फल नहीं है। संगी चेतना का भरा हुआ माल है यह। पूरन हुआ था, वह गलन हो गया। मतलब शेष नहीं रहा। कोई कारण ही नहीं रहा। भय होता ही नहीं, आत्मा निर्भय, अभय और वीतराग। कृष्ण भगवान ने जो कहा है वह सब आ गया।

शरीर में संगी चेतना, वह भय भरा हुआ है। इसलिये डिस्चार्ज होता है तो भय उत्पन्न हुए बगैर रहता नहीं। अंगो में रही चेतना है, वह सच्ची चेतना नहीं हैं। वह चेतना तो मिक्श्चर के रूप में है ? सच्ची चेतना तो कभी भी मिक्श्चर होती नहीं। यह तो बिलीफ से उत्पन्न हुई है।

संगी चेतना, उसके अंदर भय भरा हुआ है ? तब कहे, ना। महात्मा हुआ मतलब भय रहा नहीं। तब कहे, 'यह भड़का क्यों ?' तब कहे, 'वह संगी चेतना है। दरअसल चेतना नहीं।' मतलब भरी हुई चेतना है। यह भरी थी इसलिये भड़का। पर अंदर तो भड़कता नहीं है। अज्ञानी मनुष्य भड़का। तो वह एक तरह से भड़कता हैं मगर उसमें दो तरह से काम होता है, चार्ज और डिस्चार्ज, दोनों तरह से। क्योंकि संगी चेतना है न ?

प्रश्नकर्ता : मुझे यों तो बाहर से दिखाई देता है कि मेरी बेटी घंटा भर देर से आये तो भी भीतर कुछ नहीं होता।

दादाश्री : अंदर नहीं हिलता। बाहर का सब दिखाई देता है, अंदर नहीं हिलता बिल्कुल। इसे हम संगी चेतना कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा में शांति रहती होगी ?

दादाश्री : डिफरन्ट ही, दिक्कत ही नहीं होती

न ? यह जो भड़क है संगी चेतना, वह पूर्व भव का कारण है। हम उसे अपनी इच्छा के विरूद्ध होने वाली डिस्चार्ज चेतना कहते हैं।

भय नहीं जाता, तब तक इस जगत में से ज़रा सी भी उलझन जाती ही नहीं। सबसे पहले भय जाना चाहिए। राग-द्वेष और भय, तीन वस्तुएँ चली जानी चाहिए।

खुद निर्भय, देह में भय !

प्रश्नकर्ता : मैं निर्भय हूँ ऐसा भान हुआ है, उस रूप में बर्तने तक कैसे पहुँच पायेंगे ?

दादाश्री : तुझे निर्भय होने का भान नहीं हुआ ?

प्रश्नकर्ता : हुआ है।

दादाश्री : भान तो हो गया, फिर निर्भय हो गये कहलाते हो। निर्भय पद का पहले ज्ञान होता है फिर उसका भान होता है। भान हुआ मतलब निर्भय पद हो गया।

प्रश्नकर्ता : पर निर्भय हैं ऐसा ज्ञान हुआ, ऐसा भान हुआ, अब उस रूप से बर्तने तक तो यह विज्ञान जानना जरूरी है न ? तभी निर्भय पद आचरण में आयेगा न ?

दादाश्री : हाँ, निर्भय होने के बाद वह सब आचरण में होता ही है। बड़ा धमाका हुआ और तेरा शरीर कांप उठा, इसलिये हम तुझे भय वाला नहीं मानेंगें। हम जानते हैं कि यह संगी चेतना का भय हैं। तुझे भय नहीं है। मतलब जो माल भरा हुआ है वह इस संगी चेतना का है। यह जो कांपता है, वह अपने आप में निर्भय है। अब ज्ञान लेने के बाद भय होता होगा ? यदि भय है तो, तू वही चंदूभाई ही है।

प्रश्नकर्ता : बाघ की माँद के उदाहरण में वर्तमान भय की बात थी। उसमें बाद में कहा है कि, 'ए. एम. पटेल' (पूज्य दादाश्री का नाम) को भय लगता था। यह जो वर्तमान में भय लगता था तो उससे हमने नाता तोड़ दिया कि, जिसे भय लगता है न, वह मैं नहीं हूँ। साथ में ऐसा भी कहा कि 'ए. एम. पटेल' भी निर्भय होने चाहिए। वह भय भी खतम होना चाहिए।

दादाश्री : निर्भय ही है। यह अभी जो थोड़ा सा भय है वह व्यवहार से हैं। वैसे 'ए. एम. पटेल' भूत काल, भविष्य काल से पूर्णरूप से निर्भय हो गये हैं। अब केवल इस वर्तमान काल से भय रहा है, यह तलाशने गया था पर उसमें वे फेल हुए। फिर बंद कर दिया। क्योंकि माल भरा हुआ है यह तो। पर हम तो निर्भय हो गये हैं। किसी तरह का भय, किसी जगह, किसी दिन हमें कभी नहीं लगा। और कभी बमबारी होने लगे धड़ाधड़, तब भी ज़रा-सा भी भय नहीं।

प्रश्नकर्ता : मतलब ऐसा पद हमारे अनुभव में रहना चाहिए न ?

दादाश्री : रहा हुआ ही है। पर आपको लगता हैं कि मैं ही ऐसा (डरपोक) हूँ, तो फिर ? नहीं हैं डरने जैसा! परमात्मा हैं ये तो। तुझे निर्भय जैसा नहीं लगता ? किसका भय लगता है ? मेरा क्या होगा ऐसा ?

प्रश्नकर्ता : क्या होगा ऐसा तो नहीं होता।

दादाश्री : तब ? 'क्या होगा', ऐसा भविष्य काल का भय चला गया। अब वर्तमान का रहता है, नहीं ? वह भी चंदूभाई को रहता है न ? तुझे नहीं रहता न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चंदूभाई को, मुझे नहीं।

दादाश्री : हो गया। तो फिर क्या ? तुझे कैसा है ?

प्रश्नकर्ता : मुझे ये जो कुत्ते हैं, गाय हैं, उनसे डर लगता है। छोटा था तब एक बार गाय ने सींग मारा था।

दादाश्री : मगर वह तो शुद्धात्मा नहीं ? वह तो लोग यों ही पानी देखते हैं न, तब मुझे कहेंगे, 'मुझे यह पानी देख कर घबराहट होती है।' पिछले जन्म में डूब मरा था, उसका असर रह गया है। साँप देखते ही घबराहट होने लगती है, पसीना छूट जाता है। पिछले जन्म में साँप के काटने से मर गया होगा। यह बीवी को देख कर तुझे भय लगता है। क्योंकि पिछले जन्म में बीवी ने गालियाँ-वालियाँ बहुत सुनाई थीं न, इसलिये। वह असर अभी भी रह गया है। वर्ना वह आया कहाँ से ? वह कहाँ जाता ? इस जन्म में अभी अनुभव किया नहीं, तो यह आया कहाँ से ? पिछले जन्म का अनुभव सब खुल्ला हुआ।

चिंतारहित दशा, अक्रम ज्ञान से !

इस काल में ऐसा कोई ज्ञान नहीं था कि जो भविष्यकाल की चिंता बंद करे । यह अकेली ही, यह हमारी 'व्यवस्थित' की खोजबीन है। कहीं, किसी जगह 'व्यवस्थित' शब्द सुनने में नहीं आया है न ! सुना होता तो भविष्य की चिंता नहीं होती। यह तो भविष्य की सारी चिंता ('व्यवस्थित' को) सौंपकर सो जाते हैं, आराम से। और दूसरे दिन फिर भी हो जाती है, नहीं ?

प्रश्नकर्ता : वह मुझे समझ में आ गया है, अब संकल्प-विकल्प नहीं होते हैं।

दादाश्री : हाँ, वर्ना बिना चिंता के कोई मनुष्य रह नहीं पाया, क्योंकि क्रमिक मार्ग में अंतिम अवतार में चिंतारहित होता है। अहंकार जाता है तब चिंतारहित होता है। यह एक अजुबा लोगों ने अनूभव किया न! हमारे ज्ञान का हरएक अंश चिंता को बंद करनेवाला है। यदि एक 'व्यवस्थित' को समझ जाये तो सारी चिंता समाप्त हो गई समझिये।

यानी जो हुआ उसे 'व्यवस्थित' समझें अर्थात सभी तरह से हमारा ज्ञान, हरएक वस्तु में चिंतारहित कराने वाला है। क्योंकि अहंकार ऊड़ गया है न, इसलिये। चिंता करनेवाला जो अहम् है न, वह गया। वही रात-दिन रोना-धोना करवाता रहे, वह सारी वंशावली उसके साथ गई, सारी। और 'व्यवस्थित' को एक्झेक्ट (यथातथ्य) रख दिया है। यदि भविष्य का स्मरण हो तब भी वह किसके प्रति राग है कि द्वेष है, इसका हमें पता चल जायें।

इसमें कुदरत को लेना-देना नहीं !

प्रश्नकर्ता : संगी चेतना की जो भय संज्ञा है वह कुदरती है या पूर्व संस्कार पर आधारित है ?

दादाश्री : कुदरत का क्या लेना-देना है ? कुदरत को कोई लेना-देना नहीं है। यह संगी चेतना हुई है न, वह आत्मा के दस्तख़त से हुई है। आत्मा के दस्तख़त के बिना संगी चेतना होती नहीं। मतलब यह उसके संस्कार से है।

प्रश्नकर्ता : यह भय संज्ञा भी संस्कार से ही है ?

दादाश्री : संस्कार से ही। कुदरत हमें कुछ नहीं कर सकती। भीतर (व्यवहार) आत्मा यदि कोई टेढापन न करे तो कुदरत तो हेल्प ही करती है। कुदरत एक ही है सर्व सामान्य प्रकार से। यह तो भीतर व्यवहार आत्मा की दखल है, स्पंदन है कि 'ऐसा नहीं, ऐसा करो'। ऐसे दख़ल की। वर्ना कुदरत तो हेल्पिंग ही है।

संसार में डूबने का भय छूटा !

यह जग सारा पज़ल है ही न ? ऐसा लगा न ? पज़ल है न ? पहेली है कितनी बड़ी ? छूटने के

बाद मज़ा आता है ? कोई दुःख ही नहीं। खुद परमात्मा स्वरूप होने के बाद क्या दिक्कत ?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभार झापड़ लग जाती है फिर से।

दादाश्री : अभी भी आपका यह हाल है, गहरे समुद्र से बाहर निकल आये हैं न ? इस छिछले पानी में आ गये है न ? छिछले पानी में अब डूबने का भय नहीं रहा न ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : भय नहीं रहा, दहशत नहीं रही, अशांति नहीं रहती। चिंता कभी भी नहीं होती। 'ज्ञान' लेने के बाद फिर चिंता नहीं हुई न ?

भय मात्र अज्ञानता से ही !

यह तो भय में रहना पसंद है क्या ? निरंतर भय! नहीं पसंद न ? पर क्या करें ? जाये कहाँ बेचारा ? यह भय भी अज्ञानता की वजह से खड़ा हुआ है। मतलब अज्ञानता जाये तो सर्वथा निर्भय हो सकता है, वीतराग हो सकता है!

रात में तू कहे कि मुझे ओढ़ने को नहीं हो तो चलेगा। ऐसा कह कर तू सो गया। फिर एकदम ठंड लगे, तब असर होता है न तुझे ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तुझे असर होता है ?

प्रश्नकर्ता : मुझे मतलब शरीर को असर होगा, फिर मन को असर होगा।

दादाश्री : मतलब बोडी इफेक्टिव है, नहीं ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : माईन्ड इफेक्टिव है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह भी है।

दादाश्री : और यदि कोई कुछ उल्टा-सीधा बोले तो इफेक्ट होगा तुझ पर ?

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव (चंदूभाई) को होगा।

दादाश्री : तो यह मन की बेटरी, वाणी की बेटरी और यह देह की बेटरी, तीनों बेटरियाँ इफेक्टिव है।

प्रश्नकर्ता : किस बात में इफेक्टिव ?

दादाश्री : सभी बातों में इफेक्टिव है। अभी पीछे अंगारा पड़े तो तुरंत इफेक्ट होगा तुझे। होगा कि नहीं होगा ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वह पसंद नहीं आता, उस घडी अंदर कॉज़ेज़ (कारण) उत्पन्न होते हैं। अभी बच्चा ठंड लगने के कारण रोता हो तो उसे द्वेष होता रहता है और उसे कुछ ओढ़ा दिया तो खुश हो जायेगा कि नहीं होगा ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और यह मीठी गोलियाँ दें तो खुश हो जाता है और यदि कड़वा पिलायें तो ?

प्रश्नकर्ता : मुँह बिगाड़ता है।

दादाश्री : वह जो खुश और नाखुश होता है न, वे कॉज़ेज़ हैं। राग और द्वेष करता है। मीठा दिया वहाँ राग करता है और कड़वा आता है वहाँ द्वेष करता है। छोटे बच्चे द्वेष करते हैं कि नहीं ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : मतलब बचपन से ही राग-द्वेष होता रहता है। आत्मा को इफेक्ट नहीं होता, पर खुद ने मान लिया है कि मुझे इफेक्ट होता है। यह मालिक

हुआ, इसलिये इसे इफेक्ट होता है।

अज्ञानता वही भय। अज्ञानी भय का अनुभव करता है, जिसे ज्ञान मिला हो, वह भय का वेदन करता है और 'केवल ज्ञानसत्ताधारी', वह भय के असर को जानता है।

अज्ञानी मनुष्य को भय आता है। भय आते हैं, उसमें एक भी भय कार्यकारी नहीं होता। वे सारे भय भयभीत करते है फिर, अज्ञान है इसलिये। अब आपको 'ज्ञान' देने के बाद भय नहीं आयेगा ।'ज्ञान' निर्भय बनाता है। तो भी आपको भय प्रवेश कर जाता है, अब भी।

प्रश्नकर्ता : नहीं, अब बहुत कम हो गया है।

दादाश्री : तब 'ज्ञान' को पकड़े रहना अच्छी तरह से।

जीता जाए भय, जुदापन की जागृति से !

प्रश्नकर्ता : अब भय नहीं रखें न किसी प्रकार का ?

दादाश्री : भय होता ही नहीं है हमें। हम शुद्धात्मा। हमें न तो कोई देख सकता है, न कोई मार सकता है, न कोई नाम देने वाला है, न कोई नुकसान पहुँचा सकता है, कुछ है ही नहीं। यह तो खुद की भड़क के कारण खड़ा रहा है यह जगत। किसी का दखल ही नहीं है बीच में। आप शुद्धात्मा और चंदूभाई अलग। यदि चंदूभाई ढीले पड़ जायें तो हमें शीशे के सामने खड़ा करके ऐसे पीछे-से कंधा थपथपा कर कहना, 'हम हैं न आपके साथ। पहले तो अकेले थे, घबराते थे, किसी से कह नहीं पाते थे। अब तो साथ ही हैं, घबराते क्यों हो ? हम शुद्धात्मा भगवान हैं, और आप चंदूभाई हैं। इसलिये घबराना मत,' डिप्रेस हुए हों तो कंधा थपथपा दें हम। एलीवेट होते हों तब ऐसा मत कहना, पर बताना कि, 'हमारी सत्ता के कारण इतना रौब पड़ता है आपका'! होम डिपार्टमेन्ट में बैठे-बैठे फोरेन का चलाते रहना। यह निर्लेप ज्ञान है। कुछ छुएगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-दृष्टा।

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा, परमानंद! ज्ञाता-दृष्टा वह खुद का परिणाम है।

अब बारीकी से समझने की जरूरत है कि हकीकत में यह क्या है ? चाबियाँ जानने की हैं। मन दिखाये कि यह पुलिस वाला आ-जा क्यों कर रहा है ? हम पर हल्ला करने वाला है क्या ? तब हम कहें, नहीं, पुलिस वाला आपके लिये आगे नई जगह बना रहा है। हमारा हित करता हो और हम सोचते हैं कि यह पुलिस वाला हमारा नुकसान करने आया है।

मन न्यूट्रल है। इसलिए घबराने की कोई वजह नहीं है। हमारा मन अटक नहीं जाता। आपका अटक जाता है, क्योंकि गाँठे बड़ी है ना! आप ज्ञान जागृति में रहें कि दादाजी ने हमें बताया है कि हम ज्ञाता-दृष्टा हैं, मन भले ही शोर मचाता रहे, मचाना हो इतना मचा। तू जितना शोर मचाना चाहे, मचाता रहे। उस समय स्थिरता रखनी पड़े, जरा।

यहाँ निर्भयता सहज ही !

फलाँ जगह सत्संग है और आज बाहर से कोई आने वाला है सत्संग के लिये। मानो पाँच बज़े का समय दिया हो और आप तो चोविआर करते हैं। पौने पाँच बज गये हैं। मान लीजिये सब्जी-वब्जी नहीं हुई है, दूध नहीं आया हो तो थोड़ी देर बैठना पड़ जाये। ऐसे समय में यहाँ खाने की अवस्था है वह और वहाँ सत्संग की अवस्था है, वह, दोनों में उलझन पैदा होती हैं। दोनों साथ। तब भी अपने यहाँ कोई नहीं कहता कि भैया खड़े रहना। कोई कहता है ? किसी

प्रकार का बोझ नहीं लगता, नहीं ? आने में भड़क-वड़क नहीं लगती। देर हो गई है। हाय! हाय! अब क्या करेंगे ? ऐसा-वैसा नहीं लगता, नहीं ? और (ज्ञान नहीं हो तो) वहाँ तो घबराहट होती है।

ये सारी बातें मैं आपके मन का भय निकालने के लिये कहता हूँ कि भय रखने जैसा नहीं है। निर्भय होकर काम करते जाओ। हमने जो आज्ञा दी है, आप उन आज्ञाओं में रहा करो। पाँच आज्ञा बहुत कठिन हैं क्या ?

निर्भय फिर भी जोख़िम !

प्रश्नकर्ता : मतलब लौकिक ज्ञान की सारी भड़क इसमें निकाल देनी है, क्या ?

दादाश्री : वे तो सभी अपने आप निकल ही जाती हैं। वे सारी भड़क निकल जाती हैं। सारे भय गलत हैं। कई भय तो ज्ञान दिया उस दिन से ही छूट गये न!

प्रश्नकर्ता : कई। पर आप अब दिन पर दिन एक्सेप्शन अधिक खड़े करते हैं। पहले बताते थे कि 'व्यवस्थित' में जो भी हो भले ही हो। फिर उसमें एक्सेप्शन लाये कि दखल करें उनके लिये नहीं है, तब फिर 'व्यवस्थित' किस तरह से ?

दादाश्री : 'व्यवस्थित' कहा तो सारे भय चले गए।

प्रश्नकर्ता : पर बहुत सारी कन्डीशनें आ गई हैं। पहले आप ऐसा कहा करते थे कि शौक रखना मगर शौक़ीन मत बनना। मतलब विषयी मत होना। पर अभी आपने कहा कि महात्माओं के लिये हर्ज नहीं है। ये सारे एक्सेप्शन कैसे समझें ?

दादाश्री : हमेशा कुछ बातें ऐसी होती हैं कि उन्हे रोकने से नुकसान होता है। रोकने से मन उसी ओर ही खिंचता है, अधिक खिंचता है कुछ बातों में। मतलब काम लेना नहीं आता है।

प्रश्नकर्ता : भगवान के यहाँ 'क्या गलत, क्या सही' ऐसा है ही नहीं, फिर यह प्रश्न ही नहीं उठता न ?

दादाश्री : वह भगवान की दृष्टि में है। यहाँ प्रश्न उठता है। हम अभी भगवान नहीं हुए हैं, तब तक हम गुनहगार हैं।

प्रश्नकर्ता : पर फिर तो सही क्या और गलत क्या, यह प्रश्न गौण हो जाता है न ?

दादाश्री : वह बाद में, मगर तब तक खेद तो होना ही चाहिए। यह शब्द दुरूपयोग करने हेतु मैं नहीं बोलता हूँ। मैं जो बोल रहा हूँ, किसी के मन में ऐसा नहीं हो कि 'मुझे कर्म बंधन होगा', इसलिये खुल कर बताता हूँ। वर्ना मैं भी सफाई से नहीं बोलता कि, 'कर्मबंधन तो होगा, यदि आपने ऐसा नहीं किया तो।'

'हमने' आपको हर तरह की छूट दे रखी है। ''केवल एक 'विषय'(विकार) में जागृत रहना'' ऐसा कहते हैं। और वह भी खुद की स्त्री अथवा खुद के पुरुष तक ही विषय की छूट देते हैं। बिना हक के विषय के प्रति हम आपको सावधान करते हैं, क्योंकि उसमें बहुत बड़ा जोखिम है। हमारे 'अक्रम विज्ञान' में इतना ही भयस्थान 'हम' आपको दिखाते हैं, अन्य सभी बातों में आपको निर्भय बना देते हैं।

सावधान करें, फिर भी निर्भय रखें !

कुएँ में नहीं गिरते न, ऐसे इसमें जागृत रहना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : मगर मुझे एक ही चीज़, यह विषय विकार, बहुत सताती है। मुझे खुद को ऐसा

होता है कि मैं इस कास्ट (जाति) से हूँ, इसलिये ऐसा है ? क्या वजह है इसके पीछे ?

दादाश्री : मतलब तू विषयी है या तू आत्मा है ?

प्रश्नकर्ता : मैं शुद्धात्मा हूँ।

दादाश्री : तब फिर तुझे उस में क्या परेशानी है ? तू अपने शुद्धात्मा में रहेगा तो आज्ञा पालन होगा। तू विषयी हो गया तो आज्ञा पालन कैसे होगा ?

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, वह दोष हो जाते हैं तो मन में बहुत घबराहट हो जाती है कि मुझसे ऐसा हो गया ।

दादाश्री : घबराहट चंदू को होती है या शुद्धात्मा को होती है ?

प्रश्नकर्ता : घबराहट तो चंदू को ही होती है।

दादाश्री : तो फिर चंदू को होती है तो चंदू तो घबराया हुआ ही था न! तुम शुद्धात्मा में रहो।

जीवंत के साथ सावधानी से चलिये !

हर जगह भयस्थान होता है। लाल झंडी दिखाने की जगह होती है। हमारे यहाँ की लाल झंडी क्या है ? तब कहते हैं, जो चलता-फिरता जीव हो उससे छेड़खानी मत करना। कभी चंदूभाई छेड़खानी करे तो हम चंदूभाई को डाँट कर कहें, 'दादा का ज्ञान पाने के बाद अब ऐसा क्यों करते हो ?' ऐसा कह कर चंदूभाई से माफ़ी मँगवा लेना। कोई कोढ़ी बैठा हो, तो पहले के पूर्वाभ्यास, अज्ञान के अभ्यास के कारण घिन होगी। यह छेड़खानी हुई मतलब हम चंदूभाई से कहें कि, 'ऐसा नहीं करते, उसमें आत्मा देखो।' ऐसे चंदूभाई को डाँटना।

यह अक्रम विज्ञान है। यहाँ इतनी ही सावधानी बर्तनी है कि चलते-फिरते जीवों के साथ फिर से करार नहीं हो, इतना खयाल रखना। बाकी, पकौड़े, जलेबियाँ, श्रीखंड जितने खाने हों, खाइये। सारी छूट है। आप जैसे चाहें वैसे कपड़े पहनिये। मगर चलते-फिरते जीव के साथ फिर से करार नहीं हो इतनी सतर्कता रखना। शायद गलती से ऐसा हो जाये, पूर्वाभ्यास तो गया नहीं न ? इसलिये गलती होने वाली ही है। मगर वहाँ माफ़ी माँग लेना।

जिंदा लोगो के साथ नये करार इतना ही भय स्थान है और कोई भय स्थान नहीं है। किसी लंगड़े को देख कर उसकी टीका करने को मन करे, ऐसा हमसे कैसे हो सकता है ? किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, इतना देखना। इसलिये वहाँ आत्मा देखना। चलते-फिरते जीवों में आत्मा देखना। यदि ब्याह करना चाहो तो ब्याह करने में दिक्कत नहीं है, मगर यह नये करार नहीं हों यह देखते रहना। क्योंकि ब्याहना किस के अधीन है, यह मैं जानता हूँ, इसलिये मेरी ओर से रज़ामंदी है। पर नये करार अभी 'आपके' अधीन हैं और नया करार अकेला ही भयस्थान है। कभी किसी को देख कर भीतर बुरा विचार जागे कि हम तुरंत चंदूभाई को बता दें कि, 'दादा का ज्ञान पा कर अब ऐसे विचार करते हो ? एक धौल मार दूँगा'! ऐसा ज़रा उपालंभ देना। पहले हमें लोग टोक देते थे, क्योंकि खुद को मालूम नहीं था कि खुद से क्या गलत हो रहा है ? अब खुद को पता चलता है। इसलिये खुद, खुद को ही टोक देना है।

यह तो हम सारे भयस्थान दिखा देते है। यदि भयस्थान नहीं दिखायें न, तो उल्टा हो जाये। ये सभी पुण्यवंत हैं न, इसलिये बात भी प्रकट हुई, नहीं तो बात का कैसे पता भी चले ? और मैं कहाँ इसकी गहराई में उतरने जाउँ ? यह तो जब बात निकली है तो निकल गया, वर्ना किसे मालूम था कि ऐसा सब कुछ होता होगा ?

भूल तो होती है मनुष्य मात्र से। इसमें घबराना क्या ? भूल से उबारने वाले हैं वहाँ कह देना कि मुझ से ऐसी भूल होती है तो वे रास्ता दिखायेंगे।

पापों का भय !

प्रश्नकर्ता : मगर इस ज्ञान प्राप्ति के बाद हमारी जागृति इतनी बढ़ती है कि खुद के दोष दिखाई देते हैं और बहुत सारे पाप दिखाई देते हैं और उससे घबराहट होती है ।

दादाश्री : ऐसी घबराहट रखने से क्या फायदा ? देखने वाले को क्या ? होली देखने वाला मनुष्य कभी जलता है, क्या ? होली जलती है, मगर होली देखने वाला थोड़े जलता है ? वह तो चंदूभाई को होता है, तब उसका कंधा थपथपाना कि, 'भैये, होता है, (कर्म) किये हैं तो होगा'।

प्रश्नकर्ता : मगर गर्मी तो लगती है न, दूर से भी ?

दादाश्री : हाँ, लगती है, लगती है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, इतने सारे पाप किये हैं, अब कब छुटकारा मिलेगा, ऐसा होता है।

दादाश्री : हाँ!

प्रश्नकर्ता : और वे जब दिखाते है तब ऐसा होता है कि ये दादाजी नहीं मिले होते तो हमारा क्या होता ?

दादाश्री : नहीं, मगर पाप दिखाई देते है न, खुद के पाप दिखाई दिये, तब से ही जानो कि हमारी अध्यात्म की कुछ डिग्री बढ़ी है। इस दुनिया में कोई खुद का पाप नहीं देख सकता। कभी कोई दोष देख नहीं सकता। दोष देखे तो वह भगवान हो जाये। खुद के दोष देखना आये, वह भगवान हो जाता है।

शंका से भय बढ़ें !

दादाश्री : विज्ञान अच्छा है, नहीं ? रिसर्च ही करते रहो। अब किसी का भय रहता है ?

प्रश्नकर्ता : किसी का भय नहीं रहता।

दादाश्री : गोली चलाने वाले तो हैं अभी, जीवित हैं सारे।

प्रश्नकर्ता : तब भी भय नहीं रहता।

दादाश्री : गोली चलाने वाले कहीं थोड़े मर जाने वाले हैं ? लोग मर जायेंगे मगर गोली चलाने वाले मरने वाले नहीं, और दूसरे आते ही रहते है न ? गोली चलाने वाले सब मर जाने वाले हैं क्या, सारे के सारे ? वे तो रामचंद्र जी के समय में भी थे। गोली नहीं चलाते थे, दूसरा रास्ता था। भाले मारते थे, तीर चलाते थे, हथियार बदलते रहते हैं पर भाव वही के वही न, क्रोध-मान-माया-लोभ।

प्रश्नकर्ता : अब तो जो दोष किये हुए हैं, उनका उसे भय नहीं रहता क्योंकि वे अलग हैं और खुद अलग है।

वे जो कर्म बँधते थे, वे बार-बार बँधा करते थे। वे उसके पहले के जो कर्म थे, उनसे भयभीत रहता था, उसी कारण ही और बढ़ते जाते थे न!

दादाश्री : बढ़ते जाते थे। हाँ, ठीक है, भय से ही सब बढ़ता हैं। इस दुनिया में भय और शंका, ये दोनो कर्म बढ़ाने के साधन हैं । शंका हुई न तो सारी रात वह उसे गलत तरह से देखेगा, उसे खराब देखता है, सभी को खराब ही देखता है। अब शंका में कोई चीज़ सच्ची नहीं होती है।

प्रश्नकर्ता : ठीक।

दादाश्री : गोली आयेगी कि नहीं उसकी शंका रखने की जरूरत नहीं। जैसे जब इनाम लगता है, उसके लिये शंका करते हैं हम ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : पाँच लाख का इनाम लगता है तब शंका रखते हैं ? उसका टाईम हो जाये तो आकर मिलेगा। वैसे यह भी उसका टाईम होने पर आकर मिलता है।

ऐसे निकालते हैं भय !

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसे अभी घर जाऊँ तो भी बहुत भय लगता रहता है। मुझे कुछ कहेंगे, मुझे डाँटेंगे ऐसा भय बना रहता है।

दादाश्री : यदि खुद को ऐसी शंका होती हो कि कुछ कहेंगे, डाँटेंगे तो हमें चंदूभाई को अकेले में कहना कि, 'तुझे गालियाँ सुनायेंगे, तू पिटने योग्य ही है।' आप शुद्धात्मा में बैठ कर समझें कि 'मुझे कुछ होनेवाला नहीं है' ऐसा कहते रहें तो भय निकल जायेगा।

'दादा' का अवलंबन !

ऐसा है न, पिछले कई जन्मों का यह हमारा मंडन और यह आपका कितने जन्मों का मंडन ? तब कहे, अभी थोड़े ही सालों का। थोड़े ही सालों का मंडन यदि इतना जोर दिखाता है, तो आने वाले नये जन्म तो फर्राट से उड़ जायेंगे, इस बात का विश्वास हो गया न ? दादाजी की याद आते ही अंतर शांति हो जाती है न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, तुरंत ही।

दादाश्री : बस, तब तो, सबसे बड़ा उपाय यह क्या है! एक बार भय बैठा तो सारी रात निकलेगा ? और दादा का अवलंबन लिया तो ? सारे दु:ख मिट जायें! क्यों आज कुछ बोलते नहीं ?

प्रश्नकर्ता : नहीं-नहीं, सुनता हूँ न ?

दादाश्री : ज़रा बोलो, तब हिम्मत आयेगी।

'दादा' को सौंपा फिर...

किस प्रकार का भय आता है, ऐसा लगता है ?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, वह तो आपने जाना होगा न कुछ मेरे बारे में ? क्या मुझे देना है ? मुझे क्या करना है ? अब सब आप को सौंपने के बाद, मुझे क्या जानना है ?

दादाश्री : नहीं, पर आपको कुछ भड़क नहीं रहती न किसी प्रकार की ? देखो यह, सौंपना ऐसा होता है कि किंचित् मात्र भड़क न रहे, भड़क कुछ नहीं रहती है, ऐसा सुंदर है। जितना आपको सौंपना आया, उतना यह सौंप कर फिर खाओ न टेबल पर। आराम से बैठ कर खाओ, कोई बाप भी कहने वाला नहीं है। कोई ऊपरी है ही नहीं । ऊपरी तो ये भूलें और ब्लंडर्स थे। ब्लंडर्स दादाजी ने तोड़ दिये और भूलें हमें धोनी पड़ेंगी।

चंदू को भय, आत्मा को अभेदता !

जहाँ देखूं वहाँ दादा दिखाई देते हैं, फिर भय लगता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : निर्भयता तो बहुत आ गई है। वर्ना शुरू-शुरू में जब दादाजी मिले तब सदा भय लगा रहता था। अब किसी भी प्रकार का भय नहीं है। चाहे जैसी परिस्थिति हो, कोई भय नहीं लगता है।

दादाश्री : हाँ, सही बात है !

प्रश्नकर्ता : ठीक है, इसी कारण महात्मा सब निर्भय हो जाते हैं। कुछ अविवेक हो जाता है, पर उनको डर नहीं रहता वैसे। वर्ना यदि कोई बड़ा आदमी भूल करे तो उसे डर लगता है कि अरेरे! मुझसे भूल हुई तो अब मेरा क्या होगा ? जब कि दादा भगवान के पास हमें ऐसा डर नहीं लगता कि हमें डाँटेंगे या हम नीचे दिखेंगे।

दादाश्री : डर लगे, वह आत्मा नहीं कहलाये।

प्रश्नकर्ता : पर अविवेक हो जाये तो चंदूभाई को तो डर लगता है न ?

दादाश्री : लगता है, नहीं लगे तो डाँटना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह जो थोड़ा डर रहता हो तो अच्छा, फिर दूसरी बार अविवेक करने से पहले सोचेगा न ?

दादाश्री : ठीक है। मतलब मैं भूल निकालूँ तब भी उसे भय लगता ही नहीं। वर्ना इतना अधिक ताप लगता हो, कि एक भूल के बारे में बताने से पहले मन में क्या-क्या सोचते, इतना सारा रट के रखा होता, कि ऐसा-ऐसा मुझे दादा से ऐसे बताना है। यानि उल्टी पटरी पर चल पड़ा। मैं भी समझ जाता हूँ। बेचारा ऐसा मनुष्य! भय के मारे खुद का रक्षण करता है, अपमान होने के भय से। पर अब नहीं, जरा-सा भी भय नहीं।

एक चिंता नहीं, ऐसी गारन्टी !

और यदि आज्ञा का पूर्णरूप से पालन करें और चिंता हो उसे तो दो लाख का दावा दायर करने को हमने कहा है। हाँ, गारन्टी के साथ होना चाहिए। अमेरिका में तो दो लाख डॉलर का दावा ऐसा कहते हैं। पर वे तो ज्ञान लेने के बाद ऑल राईट रहते है, हमारे यहाँ जैसे। यहाँ तो बहुत ज्यादा ज्ञान में रहते हैं ये लोग। क्योंकि ज्ञान से पहले हमारे लोगों को तो यहाँ पर सारी वृत्तियाँ ही इसमें कि 'यहाँ से लाऊँ, वहाँ से इकट्ठा करूँ'। और उन लोगों को तो ऐसी कोई झंझट नहीं। पर उन्हें जो भय था कि 'ऐसे जोब चली जायेगी तो क्या होगा ?' वह सब भय निरंतर रहा करता था, जो हमारे ज्ञान से छूट गया अब। हमारी पाँच आज्ञाओं में ही रहते हैं निरंतर और सत्संग भी इतना सुंदर करते हैं। वहाँ से पत्र आते हैं, हमें भी आश्चर्य होता है।

इस काल में दादा भगवान का रक्षण मिले तो भी अच्छा है। भय तो छूटे, वर्ना बात-बात में भय लगता है।

आज्ञा पालन से निर्भय !

प्रश्नकर्ता : दादाजी, महात्मा सब निर्भय हो कर कैसे घूमते हैं ?

दादाश्री : दादा हैं सिर पर, फिर कुछ भय-वय कहाँ रहा ?

और ज्ञान अनेक लोग ले जाते हैं। देखो न, जुकाम था तो भी कल ज्ञान दिया था। मगर उस समय जुकाम बंद हो गया था उतना टाईम। फिर ज्ञान(विधि) समाप्त होने के बाद फिर से जुकाम शुरु हो गया।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को कभी चिंता होती है, वह चिंता नहीं है न ? तो वह क्या होता है ?

दादाश्री : चिंता-विंता नहीं होती। यदि चिंता हो तो उसका मुझसे मिलना किस काम का ? मेरी आज्ञा के आराधन के बाद चिंता हो, वह किस काम की ?

महात्मा सब समझदार हो गये हैं। लोग भी कहते हैं कि आपके यहाँ सत्संग में आयें तो आपके महात्माओं के चेहरों पर का तेज देख कर हम खुश हो गये।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सारे हँसते दिखाई देते हैं, दादाजी। दादाजी को देख-देख कर हँसते ही रहते हैं सभी। सभी के चेहरों पर हास्य होता है।

दादाश्री : हाँ, मगर क्या हुआ ? उनसे कहता हूँ कि आपका ऊपरी कोई बाप भी नहीं है, तो फिर उनका भय भी गया। कहने वाला मैं हूँ, जिम्मेवार मैं हूँ, मगर हमारे कहे अनुसार चलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, आज्ञा में रहना चाहिए।

दादाश्री : आज्ञा पचास प्रतिशत, साठ प्रतिशत पालो, भले ही शत प्रतिशत पालन नहीं हो। आप कितनी पालने को तैयार हैं ?

प्रश्नकर्ता : जितनी है उतनी, सारी तैयारी है।

दादाश्री : हाँ, ऐसी तैयारी रखो।

दादा के साथ अनन्यपन से निर्भयता !

प्रश्नकर्ता : अनन्यपन का अर्थ बताईये।

दादाश्री : दादा भगवान के सिवा अन्य कोई नहीं, इसका नाम अनन्यपन। सारा जगत तो रिलेटिव है। सारे जगत का, उन सब संतो का, सबका रिलेटिव है और हमारा यह रियल-रिलेटिव है। यह तो एक आश्चर्य है। इतने छोटे-छोटे बच्चे जो ज्ञान ले कर घूम रहे हैं न, वर्ल्ड में कोई डरा नहीं सकता उनको। इस ज्ञान को समझते हैं ये लोग। अनन्यपन, मार डालो तो भी कुछ नहीं, सभी कितने पुण्यवान! पुण्य हो कहाँ से कि अनन्यपन उत्पन्न हो ? अनन्यपन उत्पन्न होना वह तो महान, महान पुण्याई कहलाती है। क्योंकि यह ऐसी स्यादवाद वाणी वर्ल्ड में कभी सुनी ही नहीं होती। यह स्यादवाद वाणी और वह एकांतिक वाणी कहलाती है। सारे संसार की, सब की, हर एक मनुष्य की एकांतिक। यह स्यादवाद यानि यह भी करेक्ट (सही) और वह भी करेक्ट है। इसे यदि एक बार समझें न, तो जिम्मेदारी हम लेते हैं। अनन्यपन आना चाहिए। खुद की बुद्धि अंदर से हट जानी चाहिए।

ज्ञानी के पास काम निकाल लो !

ज्ञानी के पास तो माँगना आना चाहिए। मगर जहाँ बदले में कुछ नहीं माँगते वहाँ भय काहे का ? यदि सरकार के पास से लोन माँगे तो चुकाने का डर रहता है, यहाँ कौन सा भय ?

ज्ञानी मिले हैं तो काम निकाल लो। नहीं तो यह चतुर्गति हमारी है। जहाँ घूमना चाहो घूमो। सिद्धक्षेत्र में भी हमारी ही मालिकी है और यह चतुर्गति तो भूल भूलैया है। उसमें से छूटना महा मुश्किल है।

कोई बाप भी नहीं ऊपर !

हमारे एक महात्मा तीन आदमियों को लेकर आये थे। अप टु डेट होकर आये थे, फिर उनको बिठाया। आप क्या कह कर इनको लाये थे, चलिये दर्शन करने ?

प्रश्नकर्ता : दर्शन कहूँ तो फिर मानते नहीं। इसलिये मैंने कहा, चलिये घर चलें, ऐसे आये थे।

दादाश्री : यहाँ बैठने के बाद मैने पहला शब्द पूछा कि उन्हें घबराहट होने लगी। मैं ने कहा, यह मुझसे जुदाई रखते हो ? मैं आपसे एक क्षण भी जुदाई नहीं रखता हूँ, फिर भी जुदाई रखते हो ? तब उनको घबराहट हो गई कि यह क्या कह रहे हैं, ऐसा ? फिर मैं ने ऐसी सुनाई, ऐसी सुनाई, ऐसी सुनाई है...(सुंदर सत्संग हुआ उन लोगों से।) रातभर दिमाग में घंटे बजते रहे होंगे। सारे आवरण टूट गयें, सटाक से! सारी गाँठे-वाँठे निकल गई।

बिना वजह भड़कते रहते हो, लगातार। नहीं है कोई बोस। बिना वजह क्यों भड़कते हो ? यह गिरेगा, वह गिरेगा। नहीं है कुछ भी गिरने वाला, आप ही गिराते हो और फिर कहते हैं, साहब, भगवान ने गिराया।

प्रश्नकर्ता : गलत है।

दादाश्री : ऊपर कोई बाप भी नहीं है और इसीलिये बाप शब्द कहा। बाद में ढूँढते फिरेंगे कि यह किस देश के मनुष्य ने खोज की ?

प्रश्नकर्ता : चरोतर (गुजरात का एक क्षेत्र) के पटेल।

दादाश्री : हाँ, चरोतर के पटेल। खोजबीन करेंगे फिर, चरोतर के पटेल ही बोलेंगे न ? अन्य किसी की क्या मजाल ? 'बाप भी' बोलते ही हमारे पाटीदार खुश हो जाते है। 'बाप भी' शब्द आते ही ऐसे मुँह चौड़ा हो जाता है उस घड़ी, बोलते समय! इसलिये हम कहते हैं कि आपका कोई बाप भी ऊपरी नहीं है। यानी 'डोन्ट वरी'! निर्भय हो जाओ।

कभी कभार ऐसा गजब का पुरुष होता है और तब उसे खुद बोलना पड़ता है। यह तो गारन्टी के साथ कहता हूँ कि आपका कोई ऊपरी नहीं है। फिर रहेगा क्या कोई भय-भड़क ?

निर्भयता से मुक्ति !

प्रश्नकर्ता : हमें मुक्ति मिले तो हम निर्भय हो जाते है, अभय अवस्था। फिर किसी प्रकार का भय नहीं रहता। तो वह निर्भयता ही मुक्ति की निशानी है या और भी कोई होती है ?

दादाश्री : वही निर्भयता। बिना मुक्ति, निर्भयता उत्पन्न होती ही नहीं। अब आत्मज्ञान से लेकर अंत तक निर्भयता है।

ज्ञान प्राप्ति के बाद कहीं स्थंभित नहीं !

कोई कहेगा कि यह विकल्प नहीं है ? आप ने विकल्प रूपी धर्म खड़ा किया है, विकल्प से। नहीं, यह अक्रम विज्ञान है और वीतरागों का ही ज्ञान है। तब कहते हैं कि इसका प्रमाण क्या ? तब कहे, इसमें आने के बाद आश्चर्य बंद हो जाता है। विकल्प रूपी मार्ग में आश्चर्य बंद नहीं होते, नया दिखा कि आश्चर्य होता है कि यह क्या फिर से ? कि यह क्या फिर ? और इसमें जो दिखा वह सही। इसलिये आश्चर्य बंद हो जाता है। आप के आश्चर्य बंद हो गये न ? भय बंद हो जाते हैं। भय होता है तब तक सब आश्चर्य लगते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : किसी से प्रभावित भी नहीं होते। किसी की छाया नहीं पडती।

दादाश्री : नहीं, प्रभावित भी नहीं होते। आप खुद ही शुद्धात्मा, फिर किसी से प्रभावित होने का रहा ही नहीं।

आपको भड़क कैसी ? आप परमात्मा हैं! परमात्मा भड़केंगे तो जगत भड़क जायेगा। हम प्रकृति के उस पार है।

आत्मस्वरूप होने के बाद भय कैसा ?

आत्मा निरालंब है। बिलकुल निरालंब है। कुछ टच (स्पर्श) नहीं करता, ऐसा आप में आत्मा है। और इनमें भी वैसा ही आत्मा है। फाँसी पर चढ़ायें तब भी देह को चढ़ायेंगे, आत्मा नहीं चढ़ता। देह को बींधे तो भी आत्मा नहीं बींधता। आत्मा जिसे प्राप्त हो गया, उसे फिर भय है कोई ?

ज्ञानी, ग्यारहवाँ आश्चर्य संसार का !

इसलिये काम निकाल लेना। यह (न्यूज़) पेपर की बात नहीं है, यह गुप्त बात है। भाग्यवान हो वह यहाँ अपने आप आता है और जोग बैठ जाता है उसका। यह तो अजूबा है, इस काल का। दस लाख वर्षों में यह ग्यारहवाँ आश्चर्य है इसलिये काम निकाल लेना, हम आपको बता दें। फिर आप काम निकालना चाहें या न चाहें यह आपकी मर्जी की बात है। हम तो कह चुके कि किस की दुकान है, इतना ही! शुद्ध सोने की दुकान और फ्री ओफ कोस्ट। जितना लूट सको लूट लो। वह सोना लूटेंगे तो चोरी का भय रहेगा और अन्य अनेकों भय। और यह तो लूटा कि सारे भय चले जाते हैं। निर्भय बनाये, वीतराग बनाये! पर बुद्धि गैब हो जाती है, फिर भी ज्ञान-प्रकाश अपूर्व रहता है। बुद्धि भी प्रकाश है और ज्ञान भी प्रकाश है पर बुद्धि गैब हो जाती है। वह आपको करनी हो तो इधर आना।

जय सच्चिदानंद।

दादावाणी

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

१. ज्ञानी पुरुष की पहचान
२. सर्व दु:खों से मुक्ति
३. कर्म का विज्ञान
४. आत्मबोध
५. मैं कौन हूँ ?
६. टकराव टालिए
७. हुआ सो न्याय
८. एडजस्ट एवरीव्हेयर
९. भूगते उसी की भूल
१०. वर्तमान तीर्थकर श्री सीमंधर स्वामी

पूज्य डॉ. नीरू माँ के सत्संग कार्यक्रमों की हिन्दी में उपलब्ध वीसीडी

१. भगवत गीता ज्ञानी की दृष्टि में	भाग-१	१०. लोभ	भाग १-२
२. पैसों का व्यवहार	भाग-१	११. पोझिटिव दृष्टि	भाग १-२
३. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार	भाग-१	१२. नहीं जगत में कोई दोषीत	भाग १-२-३
४. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार	भाग-१	१३. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार	भाग १-२१
५. आत्मज्ञान	भाग १-२	१४. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार	भाग १-३९
६. सास-बहु-पति	भाग १-२	१५. कर्म का सिद्धांत	भाग १-२०
७. कर्म का सिद्धांत	भाग १-२	१६. गुरु-शिष्य	भाग १-२८
८. मान	भाग १-२-३	१७. मृत्यु का रहस्य	भाग १-३४
९. क्रोध	भाग १-२-३		

प्रत्येक वीसीडी की कीमत रू. २० है। पोस्टेज चार्ज अलग से होगा।
वीसीडी या पुस्तकें प्राप्त करने के लिये संपर्क करें : ०७९-२३९७४०३४

पूज्य नीरू माँ के टी.वी. कार्यक्रम

भारत + 'दूरदर्शन' (नेशनल) सुबह 8-30 से 9 'नई दृष्टि, नई राह' (सोम से शुक्र)
+ 'दूरदर्शन' डी.डी.१ हर रोज दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती)(सिर्फ गुजरात में)
+ 'Zee आल्फा गुजराती' सुबह 7 से 8 'वात्सल्यधारा' (गुजराती में)

UK + **ATN (827) - Mon-Sat 7 to 8 AM GMT**

USA + **"TV Asia" - Everyday 7 to 7-30 AM EST**
+ **"Aastha" - Mon-Fri 4-30 to 5 PM East Cost, 1-30 to 2 PM West Cost**
+ **TV 39 (New Jersey) - Mon to Fri 6 to 7 PM & Sat 6 to 6-30 PM**

Canada + **ATN - Every Wed-Thu 8-30 to 9 AM EST**

+ सोनी टीवी पर सुबह 7 से 7-30, (हिन्दी) (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में (भारत के अलावा)

आप्तपुत्र श्री दीपकभाई को देखिए टीवी चैनल पर :

भारत में 'Zee आल्फा गुजराती' सुबह ६ से ६-३० (गुजराती में)

Watch Aaptputra Deepakbhai on ATN in U.K. - Everyday 6-30 to 7 AM GMT

राजकोट शहर में...

परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

(परम पूज्य नीरू माँ के सान्निध्य में)

दिनांक ४ जनवरी से ८ जनवरी, २००६ तक

दि. ४ से ६ जनवरी – आध्यात्मिक ज्ञान शिविर

दि. ६ जनवरी – ज्ञानविधि - समय: सायं ३ से ६.३०

दि. ७ जनवरी – सुबह ७ बजे से भव्य शोभायात्रा

दि. ८ जनवरी – अलौकिक प्राणप्रतिष्ठा

स्थल : त्रिमंदिर, राजकोट-अहमदाबाद हाइ वे पर, तरघडीया चौकड़ी, मालीयासण गाँव के पास, जिला : राजकोट, गुजरात. **संपर्क :** (०२८१) २४६८८३०, २२३८९२४-२५

(राजकोट से अहमदाबाद की ओर जाने वाले हाइ वे पर १४ कि.मी. की दूरी पर है)

विशेष नोंध : सत्संग के दौरान प्रश्न पूछले वाले व्यक्ति की भाषा (गुजराती या हिन्दी) में, उत्तर दीया जायेगा।

कार्यक्रम में भाग लेनेवाले व्यक्तिओं के लिए विशेष सूचनाएँ :

1) यदि आप इस अवसर पर उपस्थित रहना चाहें तो कृपया इसकी अग्रिम सूचना पत्र द्वारा भेजना न भूलें।

खत लिखने का पता : श्री अतुल मालधारी, ४०३, माधवप्रेम एपार्टमेन्ट, माई मंदिर के पास, 11, मनहर प्लोट, राजकोट-३६०००२. (गुजरात) फोन : ०२८१-२४६८८३०

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग होने से सामान अलग से लाएँ।

३) ओढ़ने एवं बीछाने का चद्दर, एयर पीलो तथा सर्दी का मौसम होने के कारण गरम कपड़े भी साथ लाएँ।

३) किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

त्रिमंदिर, अडालज में होनेवाले हिन्दी सत्संग कार्यक्रम

१९-२० नवम्बर (शनि-रवि), २६-२७ नवम्बर (शनि-रवि), १७ डिसम्बर (शनि) सायं - ४ से ६.३०

आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग

१८ डिसम्बर (रवि) दोपहर - ३.३० से ७

नवम्बर - २००५
वर्ष - १, अंक - १

दादावाणी

जीवनमें अपनाने जैसी चाबी

जीवन में एक प्रिन्सिपल रखना। हमेशा पोझिटिव रहना। नेगेटिव के पक्ष में कभी मत बैठना । सामने से नेगेटिव आये, वहाँ मौन हो जाना ।

-दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation. Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press :-** Basement of Parshwanath Chambers, Nr. New R.B.I. Income Tax Area, Ahmedabad - 14 and Published from Registered Address of the trust.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964, 27540216